११७. मानव जाति एक

०९-०१-१४

मानव जाति का आधार मानव शरीर रचना ही है| मानव शरीर रचना रासायनिक- भौतिक वस्तु का है| यही सभी जीवों का है| जीव संसार का रचना भौतिक-रासायनिक परम्परा होना देखा गया है| इन रचनाओं में अंडज, पिंडज दो प्रजातियां हुईं| अंडज संसार में विकसित अंडा, जिसमें जीवों का तैयारी होती है| अविकसित अंडा में जीवों की तैयारी नहीं होती है| इस क्रम में यह पहचानने में आता है कि इसको कैसे पहचाना गया- पांचों संवेदनाओं को पहचानता हो, व्यक्त करता हो, उसके बाद आहार में निश्चयता बना हो, उसी के साथ-साथ मानव का आदेशों को अथवा मानव भाषा को स्वीकारता हो| ऐसे सभी जीवों में जीवन रहना पाया जाता है| जिनमें अनुकूलता नहीं बना रहता है उनमें जीवन नहीं रहता है| रासायनिक- भौतिक रचना रहता है| इस क्रम में देखने पर पता चलता है कि मनुष्य का एवं जीवों का अलग-अलग स्थितियां हैं| इन स्थितियों को जांचने पर पता चलता है कि मानव ज्ञानावस्था की इकाई है| सर्वदेश काल में मानव ज्ञानपूर्वक, समझदारीपूर्वक ही जीना चाहता है| ऐसा जीते समय में पाँचों संवेदनाएं भोगने में आता है|

पाँचों संवेदनाओं को हम भले प्रकार से समझ सकते हैं, हर मनुष्य समझ सकते हैं| शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियों के रूप में पांच संवेदनाएं कार्य करता हुआ देखा जाता है| पांच संवेदनाओं के आधार पर सबसे प्रभावशाली संवेदना भाषा होता है, शब्द होता है| शब्द के साथ अर्थ को समझने का अधिकार सर्वमानव में सर्वदेश काल में होना पाया गया है| अर्थ को सार्थक, असार्थक दो प्रकार से गणना किया जाता है| सार्थक अर्थ जीवन के लिये अनुकूल होना, असार्थक अर्थ शब्द होना पाया जाता है| असार्थक जीवों के सदृश जीने से है, मानने से है| अभी तक मानव अर्थात इस तिथि तक मानव सर्वदेश काल में जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया| इस प्रयास में सफलता प्राप्त हुआ| जीवों से अच्छा जीने का विधि सर्वदेश काल में पाये जाने वाले मानव में स्वीकार होना पाया जाता है| जीवों से अच्छा जीने के क्रम में मानव सफल हो गया| इसका ६ आधार हुआ| आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन। | यही जीवों से अच्छा जीने का आधार है| इस क्रम में जीता हुआ आदमी, अभी तक किसी परम्परा ने इस बात का प्रकाशन नहीं किया कि जीवों से अच्छा जीने में मानव सफल हो गया है| किसी समुदाय ने जीवों से भिन्न तो माना है, जीवों के सदृश जीना माना है|

कुछ समुदायों ने जीवों से भिन्न सोचने वाला माना है, जीने वाला नहीं माना| जीवों के सदृश ही मानव का गणना किया है| यह करीब-करीब उक्ति संगत लगता है, तर्क संगत लगता है| यह होते हुए मानव, मानव का पहचान, जीवों का पहचान अलग-अलग देख नहीं पाया| मानव को भी एक जीव ही माना गया है| इस स्थिति में चलता हुआ मानव परम्पराएँ, मानव को जीवों से भिन्न होना और जीवों से भिन्न अच्छे से जीना, उसमें सफल होना समझ में नहीं आया| समझ में आना इसलिए आवश्यक है कि आगे की सोच विचार कैसा हो? इसको समझने के लिये इसकी आवश्यकता है| आगे की सूझ-बूझ मानव चेतना से सम्बंधित है| इसको विकल्प विधि से पहचाना गया है| विकल्प विधि से जो कुछ भी पहचाना गया मानव चेतना को, उसको विकल्प विधि से प्रस्तुत किया| विकल्प विधि परम्परा से भिन्न विधि है|

परम्पराएँ ज्ञान के लिए, सही आचरण के लिए, व्यवस्था के लिए, ज्ञान मिमासा, धर्म मीमांसा विधि से अनेक प्रकार से सोचा किन्तु मानव चेतना को समझना बना नहीं| इस क्रम में मानव का पहचान करते हुए विकल्प विधि से मानव चेतना को

समझा गया | इसके लिये घोर अभ्यास, समाधि, संयम करने से मुझे समझ में आया | फलस्वरूप उसे शिक्षा विधि से समझाने के लिये तैयारी किया | उसके लिये भी कुछ समय लगाया | इस क्रम में अर्थात इस उपलब्धि में कितना समय लगा, ऐसा सोचा जाय तब यह कहना बनता है- पाने में ३० वर्ष लगा, पाया हुआ चीज को शैक्षणिक विधि से समझाने के क्रम में ३० वर्ष लगा | ऐसा ६० वर्ष लगा | ३० वर्ष की आयु में मैं अमरकंटक आया था | जिसमें से अभ्यास विधि में ३० वर्ष लगे | अभ्यास विधि से पाया हुआ वस्तु को संसार को अर्पित करने के लिये ३० वर्ष लगा | इसका करण यही रहा, मानव का पुण्य से प्राप्त हुआ | ऐसा मेरा मानना रहा | इसे क्रम में हम मानव को अर्पित किये हैं; जिसमें एक पैसे का आर्थिक लाभ का चिंता नहीं है | इस बीच छत्तसगढ़ में ही रायपुर के पास एक अछोटी नाम की जगह है | अछोटी एक छोटा सा गाँव है | गाँव में जैसा लोग रहते हैं, वैसा ही मेरा रहने का अभ्यास किया | अमरकंटक भी एक गाँव है |

२०० जनसंख्या से हम अमरकंटक को देखा था, जब हम आया था | २०० आदमी पूरा का पूरा हमको अपनाया | हमारा रहन सहन से प्रभावित हुआ | हम सबेरे ६ बजे से शाम ६ बजे तक साधना करता रहा | उससे लोगों को यह करनी अच्छा लगा | उस समय में तत्काल में रहा बुजुर्ग लोग हमको अपनाया | स्नेहिल विधि से हम यहाँ रह पाया, साधना कर पाया | इस क्रम में चलता हुआ आदमी, आदमी का ही अध्ययन किया | ये संयोग की बात है | मानव पुण्य की बात है | पाया हुआ चीज को मानव जाति के लिये अर्पित करना एक आवश्यकता माना | उसके आधार पर प्रयत्न किया | कुछ समय में हम सफल हो गया | इस प्रकार से हम ३० वर्ष साधना में, ३० वर्ष साधना में प्राप्त वस्तु को मानव के लिये अर्पित करने में, ३० वर्ष का आयु अमरकंटक आने में, ९० वर्ष चले गये | अभी हम ९३वर्ष में चल रहे हैं | आगे १४ जनवरी को हम ९४ वर्ष पूरा करेंगे | इस प्रकार ९४ वर्ष पूरा होने वाला है | समय का सदुपयोग कैसा हुआ उसको भी आपको बताया | इस क्रम में लेखों को लिख रहे हैं, लोग अपने समझ में इसको लावें और आगे परम्परा के लिये अर्पित करें | इसी उद्देश्य से इसको लिखा जा रहा है | नंबर-२- मानव शरीर रचना भी भौतिक- रासायनिक वस्तु से ही है | इससे अधिक कुछ भी नहीं है | इसमें विशेषता यही है, जीवन शरीर को चलाता है | जीवन शरीर को छोड़ने के बाद मर गया मानते हैं |

यह सभी देश काल में पाये जाने वाले मानव का चरित्र में देखने को मिलता है | इस क्रम में मानव जात में हर देश काल में मानव को मरा हुआ, मानव को जीता हुआ देखने को मिलता है | इस विधि से मानव इस बात को तय कर सकता है- जीवन जब शरीर को छोड़ देता है, तब मानव को मरा हुआ माना जाता है | इसी को बौद्धिक मृत्यु माना जाता है | ह्रदय का मृत्यु श्वासश से सम्बंधित है | श्वास बंद हो गया, ह्रदय का गति अवरुद्ध हो गया | इसे मैंने, मेरा श्रीमती जी का निधन के समय में देखा | जब ये आराम से शरीर से अलग हो गया, तब मरा हुआ माना गया | तब हम माना; जीवन ही शरीर को छोड़ता है, फलस्वरूप मरा हुआ मानते हैं | शरीर चलाने योग्य नहीं रह जाता है, तब यह होता है | इस क्रम में मानव अपने को पहचान सकता है | मरा हुआ आदमी में क्या कमी होती है, क्या निकल जाता है | जीवन ही मानव का प्रधान वस्तु है |

इसीलिये हमारा अनुसंधान चेतना से ही सम्बंधित बात रहा | चेतना में, मानव चेतना, जीव चेतना दो प्रकार से है | भारतीय आध्यात्मवादी परंपरा में चेतना को 'जीव' ही माना है | आध्यात्मवाद चेतना को अलग मानता है; किन्तु समझा नहीं पाया | इस विधि से हम संसार को देखने में आये एक दूसरे की तुलना में | सबको देखने पर यह समीक्षा हुई कि भौतिकवाद, आदर्शवाद दो स्वरूप बने | आदर्शवाद में चेतना की कल्पना है | आदर्शवाद में इस बात का सर्वाधिक प्रकाश डालने का कोशिश किया है | मैं समझता हूँ यह क्रम चलता ही रहेगा | ये कब तक चलेगा, जब तक मानव अपने स्वरूप को समझा नहीं,

सफल हुआ नहीं मानव चेतना, जागृत चेतना के रूप में अथवा विकसित चेतना के रूप में | विकसित चेतना क्या होता है, उसको भली प्रकार से विकल्प में लिखा है | मैं समझता हूँ ये जो लिखा हूँ, इसको समझने पर, जी कर देखने पर, प्रमाणित करने पर आगे की सोचना आवश्यक है | मैं अभी तक जो समझा हूँ, उसमें सामान्य रूप में जीने का अभ्यास किया हूँ | सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के योग्य मानव है | ये सब होते हुए अभी अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित नहीं हुआ | मैं अपने को समझदार मानता हूँ, इसके योग्य मानता हूँ | इस क्रम में हम काफी आगे बढ़ चुके हैं | अभी के स्थिति में अमेरिका ग्लोबल सिटिजन नाम की एक संस्था तैयार किया है | रशिया ने ग्लोबल हार्मनी नाम से एक संस्था तैयार किया है | इन दोनों के पास अपना कोई सोच विचार नहीं है | परम्परागत विधि से पाए जाने वाले भौतिकवाद, आदर्शवाद; ये मनुष्य के पास हैं | आदर्शवाद रहस्य के मारे स्तब्ध हो गया |

भौतिकवाद अपराध के मारे शर्मिन्दा है | इस क्रम में हम समझ सकते हैं, हमारा बोधकालीन अभ्यास कहाँ तक पहुंचा | मतलब मानव जात से किया गया प्रयास कहाँ तक पहुंचा है | इसको भले प्रकार से समझ सकते है | मानव जात अभी तक सर्वदेश काल में यह घोषित नहीं कर पाया कि मानव को जीवों से अच्छा जीने में सफलता मिली, इस बात को घोषित नहीं कर पाया | इस विधि से हम कुंठित बैठे हैं | इसके बावजूद भी आशा बना है अच्छा होने का | अभी तक का अच्छाई को माना जाता है विज्ञान विधि से | पूरा विज्ञान भौतिकवाद से सम्बंधित है | भौतिकवाद, आदर्शवाद दोनों के साथ मानव है | इसीलिये संतुष्टि नहीं होता | भौतिकवाद से संतुष्टि नहीं हो पाया | अधिकाधिक मानव अभी भी आदर्शवाद को ही जीने के लिये वस्तु मानता है | आदर्शवाद अपने रहस्य के आधार पर स्तब्ध हो जाना पाया गया है | तीसरा नम्बर मानव जाति का आधार भी भौतिक, रासायनिक रूप में होते हुये, जीवन संचालित होने के आधार पर चेतना को व्यक्त करता है | यह आदिकाल से ही देखने को मिला है | जब जंगल युग से शुरू किया तब से इस बात को परिशीलन किया जा सकता है | जंगल युग में मानव जीवों के सदृश ही जिया | जीवों से भिन्न मानव पत्थर युग के रूप में प्रकाशित हुआ |

धातु युग के समय तक मानव अलग होना स्वीकारा | जीवों से अलग होते हुए जीवों से भिन्न है इसको स्वीकारा नहीं | समान होना माना नहीं | भौतिकवाद के अनुसार इस पर काफी अध्ययन किया, मनुष्य को भी जीव ही माना; सोचने वाला जीव माना | अथवा तर्क को प्रयोग करने वाला माना | विकल्प में यह कहा जा रहा है कि मानव वही है जो मानव चेतना को पहचाना है | तब तक साधना है | साधना करने के लिये परम्परा है | विकल्प विधि से साधना अध्ययन है | अध्ययन विधि से ही न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य को पहचाना जाता है | मानव ही इसको समझने वाला है | जीव इसको समझता नहीं | वनस्पतियों को जरूरत ही नहीं है | पदार्थ को जरूरत रहता नहीं | इस प्रकार से मानव का यथा स्थिति समझ में होना पाया जाता है | इस क्रम में चलता हुआ मानव अभी तक जीव कोटि में मानते हुए अपने को अवमूल्यन किये है; ऐसा कहा जा सकता है | अवमूल्यन, अधिमूल्यन दोनों यथार्थ नहीं हैं | मानव परम्परा में ही अवमूल्यन, अधिमूल्यन का कार्यक्रम साहित्य के रूप में ज्यादा से ज्यादा दिखता है | मानव परम्परा में ही साहित्य का सृजन हुआ | साहित्य विधि से मानव अभी पूरा नहीं हुआ, होने को है; यह ध्वनि मिलती है | क्रम से सोचने पर यह पता चलता है, समझ में आता है- यह अभी तक तय नहीं हुआ कि मानव जीवों से अलग है या नहीं |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज